



**MAKHANLAL CHATURVEDI NATIONAL UNIVERSITY
OF JOURNALISM AND COMMUNICATION**

// UNIVERSITY LIBRARY //

-: NEWS CLIPPING SERVICE -:

DATE:21 MAY 2026

पुस्तक में 50 से अधिक विद्यार्थियों ने अपने अनुभव साझा किए गए

'माखन के लाल' नए विद्यार्थियों के लिए एमसीयू के असली 'हीरो'

स्वदेश संवाददाता ■ भोपाल

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) में नवाचारों की श्रृंखला में वर्ष 2026-2027 के लिए एडमिशन की प्रक्रिया के दौरान अगली कड़ी में हाल ही में लोकार्पित पुस्तक 'माखन के लाल' के संस्मरण लेखक पूर्व विद्यार्थियों को उनके संघर्ष और उपलब्धियों के आधार पर नए विद्यार्थियों के लिए अपना असली हीरो माना है।

मीडिया प्रमुख डॉ. पवित्र श्रीवास्तव ने बताया कि हिंदी पत्रकारिता के 200 साल के



ऐतिहासिक प्रसंग पर देश भर से पढ़ने आए 50 से अधिक विद्यार्थियों ने अपने 'माखन के लाल' विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित 36 वर्ष की यात्रा में निकले मेधावी विद्यार्थियों का एक विहंगावलोकन प्रस्तुत करती है।

कहानियाँ प्रेरणा की मिसाल हैं।

उन्होंने बताया कि इसी सकारात्मक दृष्टिकोण से पहले बैच 1991-1992 के विद्यार्थी संजय सलिल, पदम प्रसाद भंडारी, संजीव शर्मा, प्रकाश पंत, रीमा दीवान चड्ढा और दीपक पगारे जैसी मीडिया विभूतियों को सफलता के नायक के रूप में परिचित कराया जा रहा है, जिन्होंने विभिन्न समाचार माध्यमों में अपनी सेवाएँ देते हुए समाज में अपना प्रतिष्ठित स्थान बनाया है।

वे अपनी सेवाओं के दौरान देश भर में घूमते रहे हैं। इसी कड़ी में बाद के वर्षों में निकले और

कॉरिअर की एक गाइड बुक बनी: तिवारी

कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा है कि हर तरफ और हर समय अनिश्चितताओं से घिरे मीडिया जगत में टिकना आसान नहीं था। पहले बैच ने यह आधारशिला एक ऐसे समय रखी, जब मीडिया में कोई ग्लेमर नहीं था। चौबीस घंटे के चैनल नहीं आए थे। केवल अखबार या पत्रिकाएँ थे। वैतन नाममात्र का मिलता था। बाद के सत्रों में आए विद्यार्थियों ने

अपने बूते अपने संघर्ष से मीडिया में अपना स्थान बनाने की इसी परंपरा का निर्वहन किया। नए विद्यार्थियों के लिए 'माखन के लाल' कॉरिअर की एक गाइड बुक बन गई है। नई कहानियों के साथ अगले सत्र में इसका नया संस्करण भी आएगा। उन्होंने मीडिया में कार्यरत पूर्व विद्यार्थियों से कहानियाँ लिख भेजने का आग्रह किया है।

'माखन के लाल' में प्रकाशित अन्य विद्यार्थियों को भी यह सम्मान दिया गया है। यह एक प्रकार से

आगामी सत्र में विश्वविद्यालय की पहल पर होने वाली एलुमनाई मीट की तैयारी है।

'माखन के लाल' बने प्रेरणा की पाठशाला

भोपाल. माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'माखन के लाल' अब नए विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा और मार्गदर्शन का माध्यम बन रही है। विवि के मीडिया हेड डॉ. पवित्र श्रीवास्तव ने बताया कि हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूरे होने के अवसर पर प्रकाशित यह पुस्तक एमसीयू की 36 वर्षों की यात्रा का दस्तावेज है। इसमें देशभर से आए 50 से अधिक पूर्व विद्यार्थियों ने अपने संघर्ष, अनुभव और सफलता की कहानियां साझा की हैं। ये कहानियां पत्रकारिता और मीडिया क्षेत्र में आने वाले नए विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत साबित होंगी। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि 'माखन के लाल' अब केवल संस्मरणों की पुस्तक नहीं, बल्कि नए विद्यार्थियों के लिए करियर गाइड का काम कर रही है।

एमसीयू के पूर्व छात्रों की संघर्ष गाथाएं बनेंगी नए विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा

नवदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल: माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) अपने पूर्व विद्यार्थियों की सफलता और संघर्ष की कहानियों के जरिए नए छात्रों को प्रेरित करने की पहल कर रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'माखन के लाल' में मीडिया जगत में पहचान बनाने वाले 50 से अधिक पूर्व विद्यार्थियों के अनुभव और संघर्ष को शामिल किया गया है। विश्वविद्यालय का मानना है कि ये कहानियां नए विद्यार्थियों को मीडिया क्षेत्र की चुनौतियों को समझने और अपने करियर को दिशा देने में मदद करेंगी।

विश्वविद्यालय के मीडिया हेड डा. पवित्र श्रीवास्तव ने बताया कि हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूरे होने के अवसर पर प्रकाशित यह पुस्तक एमसीयू की 36 वर्षों की यात्रा का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इसमें देशभर से पैढ़ने आए विद्यार्थियों ने अपने संघर्ष, अनुभव और सफलता की कहानियां साझा की हैं। विश्वविद्यालय

- देशभर के छात्रों ने संघर्ष, अनुभव की कहानियां साझा कीं
- 'माखन के लाल' से मिलेगा करियर मार्गदर्शन

अगले संस्करण की तैयारी



विश्वविद्यालय अब 'माखन के लाल' के अगले संस्करण की तैयारी भी कर रहा है। इसके लिए मीडिया क्षेत्र में कार्यरत पूर्व विद्यार्थियों से अपनी कहानियां भेजने की अपील की गई है। विश्वविद्यालय का मानना है कि यह पुस्तक आने वाले छात्रों के लिए एक करियर गाइड की तरह काम करेगी और उन्हें अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करेगी।

अब इन पूर्व छात्रों को नए विद्यार्थियों के लिए 'रियल हीरो' के रूप में प्रस्तुत

कर रहा है, ताकि छात्र यह समझ सकें कि मेहनत और संघर्ष से मीडिया में अपनी अलग पहचान बनाई जा सकती है।

शुरुआती दौर में मीडिया क्षेत्र में न तो ग्लैमर था और न ही बेहतर वेतन: पुस्तक में विश्वविद्यालय के पहले बैच 1991-92 के विद्यार्थियों जैसे संजय सलिल, पद्म प्रसाद भंडारी, संजीव शर्मा, प्रकाश पंत, रीमा दीवान चड्ढा और दीपक पगारे सहित कई मीडिया पेशेवरों की कहानियां शामिल हैं। इन सभी ने अलग-अलग समाचार माध्यमों में काम करते हुए अपनी पहचान बनाई और मीडिया जगत में महत्वपूर्ण योगदान दिया। एमसीयू के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि शुरुआती दौर में मीडिया क्षेत्र में न तो ग्लैमर था और न ही बेहतर वेतन, फिर भी पहले बैच के विद्यार्थियों ने संघर्ष करते हुए मजबूत आधार तैयार किया। बाद के वर्षों में आने वाले विद्यार्थियों ने भी इसी परंपरा को आगे बढ़ाया।

कुलगुरु ने कहा कि पहले बैच
ने मीडिया में कैरिअर की एक
मजबूत आधारशिला रखी

‘माखन के लाल’ नए विद्यार्थियों के लिए एमसीयू के असली हीरो

स्वदेश ज्योति संवाददाता, भोपाल

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय
पत्रकारिता एवं संचार
विश्वविद्यालय (एमसीयू) में
नवाचारों की श्रृंखला में वर्ष 2026-
2027 के लिए एडमिशन
की प्रक्रिया के दौरान
अगली कड़ी में हाल ही में
लोकार्पित पुस्तक
‘माखन के लाल’ के
संस्मरण लेखक पूर्व
विद्यार्थियों को उनके
संघर्ष और उपलब्धियों के आधार
पर नए विद्यार्थियों के लिए अपना
असली हीरो माना है। मीडिया हेड
डॉ. पवित्र श्रीवास्तव ने बताया कि
हिंदी पत्रकारिता के 200 साल के



ऐतिहासिक प्रसंग पर
विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित
‘माखन के लाल’ विश्वविद्यालय
की 36 वर्ष की यात्रा में निकले
मेधावी विद्यार्थियों का एक
विहंगावलोकन प्रस्तुत करती है।
देश भर से पढ़ने आए 50 से
अधिक विद्यार्थियों ने अपने
अनुभव साझा किए गए हैं।
इनके संघर्ष और
उपलब्धियों को सम्मान देते
हुए नए सत्रों में आने वाले
ऐसे ही विद्यार्थियों के लिए
इनकी कहानियाँ प्रेरणा की मिसाल
हैं। उन्होंने बताया कि इसी
सकारात्मक दृष्टिकोण से पहले बैच
1991-1992 के विद्यार्थी संजय
सलिल, पदम प्रसाद भंडारी, संजीव

नए विद्यार्थियों के लिए ‘माखन के लाल’ बनी मार्गदर्शिका

कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा है कि हर तरफ और हर समय
अनिश्चितताओं से घिरे मीडिया जगत में टिकना आसान नहीं था। पहले बैच ने यह
आधारशिला एक ऐसे समय रखी, जब मीडिया में कोई ग्लैमर नहीं था। चौबीस घंटे
के चैनल नहीं आए थे। केवल अखबार या पत्रिकाएँ थीं। वेतन नाममात्र का मिलता था।
बाद के सत्रों में आए विद्यार्थियों ने अपने बूते अपने संघर्ष से मीडिया में अपना स्थान
बनाने की इसी परंपरा का निर्वहन किया। नए विद्यार्थियों के लिए ‘माखन के लाल’
कैरिअर की एक गाइड बुक बन गई है। नई कहानियों के साथ अगले सत्र में इसका
नया संस्करण भी आएगा। उन्होंने मीडिया में कार्यरत पूर्व विद्यार्थियों से कहानियाँ
लिख भेजने का आग्रह किया है।

शर्मा, प्रकाश पंत, रीमा दीवान चड्ढा
और दीपक पगारे जैसी मीडिया
विभूतियों को सफलता के नायक के
रूप में परिचित कराया जा रहा है,
जिन्होंने विभिन्न समाचार माध्यमों
में अपनी सेवाएं देते हुए समाज में
अपना प्रतिष्ठित स्थान बनाया है। वे
अपनी सेवाओं के दौरान देश भर

में घूमते रहे हैं। इसी कड़ी में बाद
के वर्षों में निकले और ‘माखन के
लाल’ में प्रकाशित अन्य
विद्यार्थियों को भी यह सम्मान
दिया गया है। यह एक प्रकार से
आगामी सत्र में विश्वविद्यालय की
पहल पर होने वाली एलुमनाई मीट
की तैयारी है।

कैम्पस अपडेट

एमसीयू की 'माखन के लाल' बनी नए विद्यार्थियों की करियर गाइड

भोपाल | माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) में वर्ष 2026-2027 की प्रवेश प्रक्रिया के दौरान हाल ही में लोकार्पित पुस्तक 'माखन के लाल' को नए विद्यार्थियों के लिए प्रेरक मार्गदर्शक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। मीडिया हेड डॉ. पवित्र श्रीवास्तव के अनुसार, यह पुस्तक हिंदी पत्रकारिता के 200 साल के ऐतिहासिक प्रसंग के संदर्भ में विश्वविद्यालय की 36 वर्ष की यात्रा के मेधावी विद्यार्थियों का विहंगमलोकन प्रस्तुत करती है। इसमें देश भर से आए 50 से अधिक विद्यार्थियों के संघर्ष और उपलब्धियों की कहानियाँ शामिल हैं।

कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि मीडिया जगत की अनिश्चितताओं के बीच पहले बैच 1991-1992 ने उस दौर में मजबूत आधारशिला रखी। उस समय न स्लैमर था न 24 घंटे के चैनल। उन्होंने पूर्व विद्यार्थियों से नई कहानियाँ भेजने का आग्रह किया। बताया कि अगले सत्र में पुस्तक का नया संस्करण भी आएगा।

MCU former VC's vile post about Norwegian scribe sparks criticism

Our Staff Reporter

BHOPAL

A post from Jagdish Upasane, former vice-chancellor of the Makhanlal Chaturvedi National University of Journalism and Communication, on the Norwegian journalist, Helle Lyng, has invited criticism on social media.

Lyng hogged the media headlines after asking a question to Prime Minister Narendra Modi during his visit to Norway.

Upasane wrote a post on social media with a photograph of Lyng in a swimsuit.

In the post, he wrote, "This is the so-called Norwegian journalist who has become the apple of the eye of the Congress-led opposition and their media ecosystem."

Upasane's post has sparked resentment among journalists and other people who called it an attack on the privacy of a woman.

A senior journalist, Rakesh Pathak, has dashed off an open letter to Upasane, say-

Jagdish Upasane uses Helle Lyng's personal picture

ing it was an effort to peep into the personal affair of someone.

According to Pathak, the people belonging to the western society prefer such habits, and those from the Indian society also love such clothing in private these days.

Wearing clothes and eating habits are something personal, but before making such comments, a former vice chancellor should have thought about what impact such statements will have on the students, Pathak wrote.

Former chief income tax commissioner RK Paliwal, objecting to the photograph, wrote, 'Would he dare share such a photograph of his MP?' Upasane was the vice chancellor from 2010 to 2019. His former students are also posting comments against him.